Chapter 23

8th class hindi Notes राह भटके हिरन के बच्चे को (कविता)

राह भटके हिरन के बच्चे को (कविता)

-डॉ ० नि ० (वियतनाम) (जाड़े की रात .....से मत , मत रो , नन्हें हिरण ।)

भावार्थ –

कवि ने देखा एक हिरण का छोटा बच्चा खेलने के चक्कर में मस्त होकर राह भटककर पहाड़ पर रो रहा है । उसके आँखों में माँ से बिछुड़ने की वेदना है । कवि उस छोटे हिरन छौने से कहता है । अरे हिरन – शावक मत रोओ , सो जाओ , तेरी माँ तुझे अवश्य मिलेगी ।

बाँस के वन में अकवन के वन में रात को ठंडी हवा तुझे लोरी सुनाकर सुलायेगी । बेहिचक सो जा ।

ऊपर आकाश में तारे , नीचे गिरे नरम – नरम पत्ते के ढेर पर सो जा । सुबह होते ही जब सूर्योदय होगा , किरणें फैल जायेगी तो तुम्हारी माँ तुझे मिले जायेगी ।

शब्दार्थ –

मदमस्त = डूबा जाना , लीन हो जाना । वेदना = दुःख पीड़ा । बेहिचक = बिना रूकावट के ।।

https://www.evidyarthi.in/